कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

रोमियों 8:35 – “कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या दुःख या संकट, या उत्पीड़न, या भुखमरी, या नग्नता, या
खतरा, या तलवार?”

अगर आप इस पद को जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं तो शायद आप इसे ऐसे समझ लें: “क्या कोई दुःख, संकट, भुखमरी, या कठिनाई हमें यीशु से प्यार करना छोड़ने पर मजबूर कर सकता है?” लेकिन यह समझ सही नहीं है। प्रेरित पौलुस ने यह पद पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के बिना नहीं लिखा। वास्तव में, दुनिया में कोई भी व्यक्ति अपनी शक्ति से इतनी कठिनाइयों के बीच से होकर गुजरते हुए मसीह से दूर नहीं हो सकता।

तो इसका असली अर्थ क्या है?
सही अनुवाद यह होगा:
“कौन या क्या हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या यह दुःख, संकट, कठिनाई, नग्नता, खतरा या तलवार है?”

यहाँ जो प्रेम का जिक्र है, वह हमारा मसीह के प्रति प्रेम नहीं है, बल्कि मसीह का हमारे प्रति प्रेम है। इसका मतलब यह है कि चाहे हम भुखमरी या संकट में हों, मसीह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे। चाहे कठिनाइयाँ कितनी भी हों, मसीह हमारे साथ

कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

रहेंगे, हमें सांत्वना देंगे और हमारी मदद करेंगे।

जैसा कि शास्त्र में लिखा है:
भजन संहिता 23:4-6 –
“हाँ, मैं मृत्यु की छाया के घाटी से होकर जाऊँ, तो भी मैं
किसी बुराई से नहीं डरूँगा; क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरा
डंडा और तेरी छड़ी मुझे सान्त्वना देती हैं।
तू मेरे सामने मेरे शत्रुओं के सामने मेज़ सजाता है; तूने
मेरे सिर पर तेल लगाया, और मेरा प्याला भर-भर कर भरा है। निश्चित ही भलाई और कृपा मेरे जीवन के सभी दिन मेरे पीछे
पीछे आएँगी; और मैं यहवे के घर में सदैव निवास करूँगा।”

यदि हमने मसीह में विश्वास रखा है, तो हमें पता होना चाहिए कि उनका प्रेम हमारे ऊपर हमेशा बना रहेगा। वे कभी भी हमें किसी परिस्थिति में अकेला नहीं छोड़ेंगे। कठिनाइयाँ आएंगी, पर मसीह का प्रेम हमें हमेशा बनाए रखेगा।

यदि आपने अभी तक यीशु को स्वीकार नहीं किया है:
तो आप अभी भी उनके प्रेम में शामिल नहीं हुए हैं। आप उनके दरवाजे के बाहर खड़े हैं। मसीह आपके पक्ष में नहीं हो सकते क्योंकि आप उन्हें स्वीकार नहीं करते। लेकिन आज ही उनका बुलावा स्वीकार करें। अपने मुंह से स्वीकार करें कि यीशु आपके जीवन के

कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

प्रभु और उद्धारकर्ता हैं, और अपने पापों से पछताएँ।

पछतावा का अर्थ है अपने पुराने पापों और बुराइयों को छोड़ना – जैसे कि यदि आप कभी व्यभिचार में थे, तो उसे छोड़ दें; यदि चोरी करते थे, तो उसे रोक दें; यदि हत्या या अन्य बुराइयाँ करते थे, तो उन्हें त्याग दें।

सच्चा पछतावा तभी होता है जब आप अपने कर्मों से उन्हें छोड़ दें। और जब आप ऐसा करते हैं, तो ईश्वर आपकी सारी पुरानी बुराइयों और पापों को माफ कर देंगे।

उस क्षण आपके भीतर एक असाधारण शांति आएगी, जिसे केवल ईश्वर अपने पश्चाताप करने वालों को देते हैं। यह शांति आपके अंदर का अनुभव होगा – यह आपके माफ़ किए जाने का प्रमाण है।

और इस शांति को बनाए रखने के लिए:
जल्दी से जल बपतिस्मा लें। सही और शास्त्रीय बपतिस्मा वह है जिसमें पानी भरा हो (यूहन्ना 3:23) और यीशु मसीह के नाम पर दिया गया हो (प्रेरितों के काम 2:38, 8:16, 10:48, 19:5)। यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर किया जाता है। जब आप ऐसा करेंगे, तो यह शांति आपके अंदर हमेशा बनी रहेगी।

यह शांति ही मसीह का प्रेम है, जो आपको किसी भी कठिनाई, संकट या

कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

सुख-समृद्धि में भी कभी नहीं छोड़ेगा। यह अंतिम दिन तक आपका संरक्षण करेगा।

भगवान आपका भला करे।

यदि आप चाहें तो इन अच्छी खबरों को दूसरों के साथ साझा करें। और यदि आप हमारे अध्ययन सामग्री को ईमेल या व्हाट्सएप के माध्यम से पाना चाहते हैं, तो हमें नीचे कमेंट में संदेश भेजें या इस नंबर पर संपर्क करें: +255 789001312

हमारे व्हाट्सएप चैनल से जुड़ें >> [WHATSAPP लिंक]

Share on:

कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

WhatsApp